DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. college, Barachakia
BRABU- Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part — II
Subject — SANSKRIT
Paper — III

14×2 = 28 Marks

~~[illegible]~~

आलोचनात्मक प्रश्नोत्तर (कादम्बरी से)

1. बाणभट्ट की कथाशैली का विवेचन (कादम्बरी के संदर्भ में) करें-

उत्तर— 'रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनोहरति।
सा किं तरुणी! नहिं नहिं वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य॥"

बाणभट्ट असाधारण प्रतिभाशाली गद्य लेखक हैं। सानुप्रास, समासयुक्त पदावली, अपरिमित शब्दभण्डार, प्रकृति के व्यापक एवं मनोहारी चित्र, कोमल एवं भीषण कल्पना, मानवीय मनोवृत्तियों की सूक्ष्म तथा हृदयग्राही परिकल्पना आदि के दर्शन यदि कहीं संस्कृत गद्यलेखकों में एक साथ होते हैं, तो वे बाणभट्ट ही हैं।

बाणभट्ट रमणीय प्रणयचित्रों नख-शिख वर्णन तथा प्राकृतिक दृश्यों के अंकन में अनुपम कलाकार हैं। उनके प्रणय चित्रों में संयोग और वियोग दोनों ही भावों का सफल चित्रण हुआ है। कवि ने महाश्वेता तथा कादम्बरी के विरह- वर्णन में अद्वितीय कला का प्रदर्शन किया है। उनके काव्य में चरित्र-चित्रण की कला तो देखते बनती है। उनके पात्र इतनी सजीवता से चित्रित किये गये हैं कि उनकी मंजुल मूर्ति हमारे नेत्रपटल के सामने आकर उपस्थित हो जाती है। प्रजापालक एवं पराक्रमी राजा शूद्रक की मूर्ति सबके हृदय में उत्साह का संचार करती है। सौम्य तापस हारित, ज्ञानवृद्ध जाबालि, वदान्य नरपति तारापीड, शास्त्र एवं लोककुशल अमात्य शुकनास, शुभ्रवसना तपस्विनी महाश्वेता एवं कमनीय कलेवरा कादम्बरी — कवि की तूलिका से चित्रित ये पात्र हमारे चित्त पर अमिट प्रभाव डालते हैं।

बाणभट्ट अपनी कृति में अनुपम काव्यकौशल, मनोरम कल्पना वैभव और ललितपदविन्यास का यदि आश्रय लेते हैं तो कहीं विकट वर्णन भी उनके काव्य में मिल जाते हैं। बाण की शैली पाञ्चाली है वे विषयानुरूप पदविन्यास में कुशल हैं। उदाहरणार्थ— यदि विन्ध्याटवी के प्रसंग में विकट पदावली और जटिल शैली है—

'क्वचित् प्रलयवेलेव महावराह दंष्ट्रासमुत्खातधरणिमण्डला,
क्वचिदुन्मत्त मृगपतिनादभीतेव - - - - - - - - - !

तो कहीं वसन्त वर्णन प्रसंग में ललित पदविन्यास की चारुता देखते बनती है— 'अशोकतरुताडनारणित रमणी मणिनूपुर झंकार सहस्रमुखरेषु सकलजीवलोकहृदयानन्दायकेषु मधुमास दिवसेषु।"

P.T.O.

महाकवि बाणभट्ट अलंकार प्रयोग के सफल कलाकार हैं। वे प्रचलित और अप्रचलित सभी अलंकारों का प्रयोग अपने काव्य में करते हैं। उनके सद्प्रयोग से उन्हें अभिव्यक्ति में पूर्ण सफलता मिली है। वर्णनों को संश्लिष्ट तथा प्रभावोत्पादक बनाने के लिए, भावों में तीव्रता प्रदान करने हेतु कवि ने उपमा, उत्प्रेक्षा, श्लेष, विरोधाभास आदि अलंकारों का बड़ा ही सुन्दर प्रयोग किया है, परन्तु परिसंख्या अलंकार के तो वे सम्राट प्रतीत होते हैं। अलंकारों के प्रयोग ने बाण के गद्य में एक अपूर्व जीवनी शक्ति डाल दी है। रसनोपमा का यह उदाहरण कितना मनोरम है — "क्रमेण च कृतं मे वपुषि वसन्त इव मधुमासेन, मधुमास इव नवपल्लवेन, नवपल्लव इव कुसुमेन, कुसुम इव मधुकरेण, मधुकर इव मदेन नवयौवनेन पदम्।"

परिसंख्या अलंकार का यह रोचक प्रयोग विद्वानों के लिए नितान्त हृदयावर्जक है, जहाँ बाणभट्ट जाबालि के आश्रम का सुन्दर चित्र खींच रहे हैं — "यत्र च महाभारते शकुनिवधः पुराणे वायुप्रलपितम्, वयःपरिणामेन द्विजपतनम्, उपवन चन्दनेषु जाड्यम्, अग्नीनां भूतिमत्वम्, एणकानां गीतश्रवणव्यसनम्, शिखण्डिनां नृत्यपक्षपातः, भुजङ्गमानां भोगः, कपीनां श्रीफलाभिलाषः, मूलानामधोगतिः।"

प्रकृति चित्रण में बाणभट्ट की निपुणता तो देखते बनती है। संस्कृत के कुछ महाकवि प्रकृति के मंजुल रूप के चित्रण में ही चतुर दिख पड़ते हैं तो कुछ प्रकृति के भयावह तथा रोमांचकारी स्वरूप के वर्णन में कृतकार्य प्रतीत होते हैं, परन्तु बाणभट्ट की यह अपनी विशेषता है कि उनकी लेखनी ने प्रकृति के उभय-प्रकार के — मधुर तथा भयावह दृश्यों के वर्णन में समान रूप से सफलता प्राप्त की है। उनके प्रकृति चित्रण में सूक्ष्मता, औचित्य, चित्रोपमता आदि एक साथ विद्यमान हैं। कादम्बरी में सायंकालीन प्रकृति का यह हृदयग्राही चित्रण किसके मन को आकृष्ट नहीं करता — "क्वापि विहृत्य दिवसावसाने लोहिततारका तपोवनधेनुरिव कपिला परिवर्तमाना संध्या तपोवनधेनैरदृश्यत। अचिरप्रोषिते सवितरि शोकविधुरा कमलमुकुल कमण्डलु धारिणि हंसपति दुकूलपरिधाना मृणालधवल — — — — ।"

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि बाणभट्ट की विशेषता केवल अलंकार के कुशल प्रयोग में, शैली की विविधता और कल्पना की नवीनता में ही नहीं है, उनके ज्ञान का भण्डार भी महान है। राजनीति का ज्ञान और जीवन का अनुभव इतना व्यापक है कि वे जो कुछ कहते हैं, वह गम्भीर ज्ञान गौरव से आक्रान्त रहता है। इन्हीं विशेषताओं के कारण उनके उत्तरवर्ती विद्वानों ने उनके विषय में — "बाणोच्छिष्टं जगत् सर्वम्" — ऐसा उद्घोष किया है।